ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-6* July- 2021

Innovation The Research Concept

कला (चित्रकला) अध्यनन के विविध स्त्रोत

Detailed Introduction to Indian Contemporary Painting

Paper Submission: 04/07/2021, Date of Acceptance: 13/07/2021, Date of Publication: 24/07/2021

सुनील कुमावत
शोध छात्र,
चित्रकला विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान, भारत

Abstract

किसी भी देश की संस्कृति की पहचान और उसका महत्व, समकालीन कला, स्थापत्य और शिल्प तथा साहित्य के भंडार की गुणवत्ता से आंका जा सकता है विद्या और कला सभी काल में देश का अनमोल धन रही है। कला हृदय और आंखों को आकर्षित करती है, सम्पूर्ण विश्व में भारतीय चित्रकला उत्तम कोटि की रही है, भारतीय शास्त्रों के अध्ययन से पता चलता है कि कला शब्द को ललित कला के लिये एवं शिल्प कला को उपयोगी कला के लिये प्रयुक्त किया गया है। सत्य तो यह है कि चित्र बनाने की प्रवृति सर्वदा से ही हमारे पूर्वजों में विद्यमान रही है मनुष्य ने ही अपनी मूक भावनाओं को अपनी तूलिका द्वारा टेढ़ी-मेढ़ी रेखाकृतियों के माध्यम से गुफाओं और चट्टानों की भित्तियों पर अंकित कर अभिव्यक्त किया। भारतीय चित्रकला के इतिहास का विभिन्न स्त्रोतों और ग्रन्थों के माध्यम से अध्ययन किया जा सकता है जैसे कला के ऐतिहासिक ग्रन्थ वेद, पुराण, नाट्य, साहित्य, संगीत, काव्य, रामायण, महाभारत आदि है। इसके अलावा भारतीय कला को समझने एवं इसकी प्राचीनता का अध्ययन करने के लिये शिलालेखों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। भारतीय भित्तिचित्रों के इतिहास में जोगीमारा की गुफाओं के बाद अजन्ता के भित्ति चित्र भी उल्लेखनीय है। जिनका निर्माण शुग, कुषाण, गुप्त आदि अनेक राजाओं के समय हुआ था। मुगलकाल में भी कला का उल्लेख बादशाहों ने अपनी आत्मकथाओं में किया है। भारतीय मुद्राओं के अध्ययन से भी प्राचीन भारत के इतिहास पर प्रकाश डलता है।

The identity and importance of the culture of any country can be judged by the quality of contemporary art, architecture and craft and the store of literature, education and art have been the precious wealth of the country in all times. Art attracts the eyes and eyes, Indian painting has been of the best quality all over the world, the study of Indian scriptures shows that the word art has been used for fine arts and for the useful art of craftsmanship. The truth is that the tendency of painting has been present in our ancestors since time immemorial, man himself expressed his silent feelings through his paintbrush through zig-zag drawings on caves and rock walls. The history of Indian painting can be studied through various sources and texts like Vedas, Puranas, Natya, Sahitya, Sangeet, Poetry, Ramayana, Mahabharata etc. Apart from this, inscriptions have also been an important contribution to understand Indian art and to study its antiquity. After the Jogimara caves, the Ajanta frescoes are also notable in the history of Indian frescos. Which were built during the time of many kings like Shuga, Kushan, Gupta etc. Even in the Mughal period, the art has been mentioned by the emperors in their biographies. The study of Indian currencies also throws light on the history of ancient India.

मुख्य शब्दः ऐतिहासिकग्रन्थ,आत्मकथायें, पुराण, चित्रलक्षण, एन्साइक्लोपीडिया, काव्यशास्त्र, वकायत-ए-बाबरी, तुजुक-ए-जहाँगीर, इण्डो-बैक्ट्रियन

Historical texts, biographies, Puranas, Chitralakshana, Encyclopedia, Poetry, Vakayat-e-Babri, Tuzuk-e-Jahangir, Indoi-Bactrian.

प्रस्तावना

कला मनुष्य की रचना है जो उसके जीवन में आनन्द प्रदानकरती है।

भारतीय शास्त्रों के अध्ययन से पता चलता है कि ‘‘कला’’ शब्द का प्रयोग ऋग्वेद. में हुआ । कला शब्द का प्रयोग भरतमुनी ने अपने नाट्यशास्त्र में किया । भारतीय शास्त्रों में कला शब्द को ‘‘ललित कला’के लिए एवं शिल्प उपयोगी कला के लिए प्रयुक्तकिया गया है।

आज कला शब्द का व्यवहार अंग्रेजी के ‘आर्ट’ के अर्थ में होने लगा है। परन्तु आर्ट शब्द का प्रयोग बहुत ही व्यापक है ‘‘रून्स और हैरी जी.ए.श्रीकेल की एन्साइक्लोपेडिया

'आव-दि-आर्टस' के अनुसार, मनुष्य के सारे ही काम शिल्प गृह निर्माण, उद्योग, चिकित्सा, शासन, कर्म और शिक्षा आ जाते है।

अध्यनन का उद्देश्य

समकालीन भारत की कला व कलाकारों की चर्चा समय समय पर राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय पत्र पत्रिकाओं व पुस्तकों में होती रही है। उनपर शोध कार्य भी हुए हैं परंतु यहाँ की कला व कलाकारों को मान्यता दिलाने में भारत के कई प्रमुख कला संगठनों का योगदान रहा है। उन पर व्यापक शोध कार्य नहीं हो सका है। जिससे इन कला संगठनों का संघर्षमय वह स्वर्णिम इतिहास व उनके द्वारा भारतीय कला को आगे बढ़ने में दिए गए योगदान का कलाकारों व कला प्रियजन को उचित ज्ञान नहीं है। वर्तमान में समकालीन कला का जो अध्ययन किया जा रहा है उसका प्रमुख आधार कला और कलाकारों द्वारा विविध स्रोतों के माध्यम से किया गया कला का अध्ययन है। कला के विविध स्रोतों के अध्ययन के बिना समकालीन भारत की कला का अध्ययन अधूरा रहता है। अतः इस क्षेत्र में व्यापक शोध की अत्यंत आवश्यकता है। इसी उद्देश्य से मैने। चित्रकला के अध्ययन के विविध स्रोतों पर लेख प्रकाशित किया है।

कला अध्ययन के विभिन्न स्त्रोत एवं प्राचीन ग्रन्थ

वे स्त्रोत जो कला के प्राचीन इतिहास को जानने में हमारी मदद करते है उनका अध्ययन हम विभिन्न श्रेणियों में विभक्त कर सकते है।

ऐतिहासिक ग्रन्थ

प्राचीन भारतीय समाज और साहित्य में ललितकलाओं में विशेष रूप से चित्रकला की क्या स्थिति रही है उसके बारे में जानकारी हमें विभिन्न ऐतिहासिक ग्रन्थों से प्राप्त हो जाती है। भारतीय चित्रकला का उल्लेख समय-समय पर वेद, पुराण, नाट्य, साहित्य, संगीत, काव्य, आयुर्वेद, रामायण, महाभारत आदि वैदिक एवं लौकिक साहित्य से प्राप्त होता है। इन ग्रन्थों से चित्रकला की उत्पत्ति, रंग, रूप, रेखाओं आदि के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। संस्कृत साहित्य में शताब्दियों ई. पूर्व से सोलहवीं शती तक चित्रकला के बारे में विवरण प्राप्त होता रहा है।

चित्रकला का उल्लेख वैदिक साहित्य से शुरू होता है। तथा क्रमशः बौद्ध एवं जैन साहित्य पूर्व मध्यकालीन साहित्य तथा मध्यकालीन साहित्यक अभिलेखों एवं साहित्यक साक्ष्यों के माध्यम से चित्रकला की उत्पत्ति, उसके विभिन्न आयामों के बारे में विधिवत जानकारी प्राप्त होती है।

शिलालेख एवं भित्ति चित्र

भारतीय कला को समझने एवं इसकी प्राचीनता का अध्ययन करने के लिए शिलालेखों का महत्वपूर्ण योगदान है। शिलालेखों से प्राचीनकालीन धर्म कला व वास्तुयोजना और नीति नियमों का उल्लेख मिलता है। भारत के चित्रविद्याचार्यो ने विषय और कला दोनों के अतीवन की दृष्टि से जिस उच्चता को प्राप्त किया उसका विश्वविदित उदाहरण अजन्ता की गुफाओं के भित्ति चित्र है। कितने अधिक विस्तार से शिला में उत्कीर्ण गुफाओं के भीतर विशाल मण्डणों की छातों पर भित्तियों पर और स्तम्भों पर तिल-तिल स्थानों को वर्ण, रेखा और भावो के कौशल से पाट दिया गया है। चित्रकला के क्षेत्र में ऐसा उदात प्रयत्न सम्भवतः संसार में अन्यत्र नहीं है।अजन्ता की चित्र भित्तियाँ भारतीय चित्रकला, धर्म और जीवन को प्रस्तुत करती है।

दक्षिण भारत स्थित सित्तनवासल की छत तथा भित्तियों पर नृत्य करती हुई अप्सरा और अमलवन में विहार करते हुए मत्तगजों का आलेखन अत्यन्त सुन्दर है। ज्ञात होता है कि गुफाओं और देवालयों की भित्तियों पर चित्र लिखने की प्रथा को राष्ट्रीय स्वरूप ही प्राप्त हो गया था न केवल भारत में बल्कि बाहर भी जहाँ-जहाँ भारतीय धर्म और संस्कृति का प्रसार हुआ, चित्र बनाने की प्रथा भी साथ-साथ फैल गयी।

भारतीय भित्तिचित्रों की अपनी अलग परम्परा है। भारतीय चित्रकला के उज्जवल इतिहास की शुरूआत भित्ति चित्रों से ही होती है दुनियां के किसी भी क्षेत्र में इनके मुकाबले में चित्र नहीं बने है।

भारत में सरगुजा रियासत की जोगीमारा गुफा के उपलब्ध भित्ति चित्रों से भारतीय चित्रकला के प्रामाणिक इतिहास का आरम्भ होता है इस गुफा में उपलब्ध सीतावोंगरा गुफा या तो प्रेक्षागार थी या कोई मंदिर था। इस गुफा के चित्रों को सुरक्षित बनाये रखने के लिए उनके ऊपर मिट्टी की कुछ रेखायें खींची गई है।

भारतीय भित्ति चित्रों के इतिहास में जोगीमारा की गुफाओं के बाद अजन्ता के चित्रों का नाम आता है, जिसका निर्माण शुंग, कुषाण, गुप्त आदि अनेक राजाओं के समय में हुआ।

राजवंशो द्वारा संरक्षित और पल्लवित चित्रकला

भारतीय राजकुलों द्वारा संरक्षित और पल्लवित चित्रकला के इस अध्याय को बुद्ध के समय से आरम्भ करते है यदि वेदों, रामायण और महाभारत के साक्ष्यों को हम छोड़ भी दे और केवल जैन बौद्धों के साहित्य, पुराण, दर्शन, नाट्य शास्त्र, कामसूत्र, कोश, काव्यशास्त्र आदि में निहित चित्रकला-विषयक सामग्री का ही चयन करें तो तब से लेकर आज तक प्रत्येक यशस्वी साम्राज्य तथा राज्य में चित्रकला का जो महत्व बना रहा उसका सहज ही परिचय पा सकते है।

यदि समाज को राज्य का दर्पण कहा जा सकता है और साहित्य का कोई मूल्य है तो हमें यह स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं करना चाहिए कि तत्कालीन साहित्य में चित्रकला के संबंध में जो कुछ भी कहा गया है वह सत्य है और उन सभी का श्रेय उस राज्य तथा समाज को उपलब्ध है।

भारत में चित्रकला की महान विरासत भित्ति चित्रों के रूप में सुरक्षित है। ये भित्ति चित्र भारत में सर्वत्र बिखरे है। इन भित्ति चित्रों के माध्यम से बौद्धकाल ने इतनी लोकप्रियता प्राप्त की जिससे उत्तर-पश्चिम सीमा प्रान्त और मध्य एशिया के समस्त देशों की कलात्मक अभिरूचियों के क्षेत्र में एक महान परिवर्तन की स्थिति लक्षित हुई। बौद्धकाल की इस महान थाती का समृद्ध केन्द्र अजन्ता है।

शिलालेख ऐतिहासिक खोज में बडे महत्व की वस्तु है वे धातुओं और पत्थरों पर अंकित है। शिलालेखों पर अंकित जानकारी को बिना हिचकिचाहट के प्रयोग में लाया जा सकता हे। पुस्तकों में ज्ञात अज्ञात लेखकों द्वारा जोडे गए क्षेपकी के कारण सन्देह की सम्भावना बनी रही है। अतः स्पष्ट है। कि शिलालेखें की प्रामाणिकता में किसी भी प्रकार का सन्देह नहीं किया जा सकता। इन शिलालेखों से तत्कालीन लेखन शैली का पता चलता है।

बादशाहों द्वारा लिखित,आत्मकथायें:-

भारत में चित्रकला का आरम्भ भित्ति चित्रों और छविचित्रों के अंकन से हुआ है। भित्ति चित्र भवनों, दीवारों, छतों और फर्शों पर बनाये जाते थे। इस प्रकार के चित्रों के केन्द्र राजा महाराजाओं के दरबार हुआ करते थे। जिसमें **शहंशाह** अकबर पहले कलाप्रेमी शासक हुए। जिन्होंनं भारतीय चित्रकला को पुनरूज्जीवित किया। तथा अच्छे चित्रकारों को अपने यहाँ बड़े आदरपूर्वक आमंत्रित किया।

अभारतीय कथाओं के चित्रः- हम्जा - चित्रावली इसका उदाहरण है जिसका निर्माण अकबर ने करवाया था।

भारतीय कथाओं के चित्र :-

इन चित्रों में काश्मिरी और राजस्थानी शैली की प्रधानता है। इनका विषय भारतीय काव्य है विशेषतया ''रामायण', ''महाभारत' नैषहाचरित आदि।

शहंशाह कि आत्मकथायें

शहशांह बाबर एक अदभुत कला प्रेमी शासक था, तुर्की भाषा में "बाबर का आत्मचरित'' उल्लेखित पुस्तक है। बाकआत-बाबरी (बाबर की आत्मकथा) अकबर के काल में चित्रित पुस्तक 'अकबरनामा एवं आइने-अकबरी' है जहाँगीर ने अपने आत्मचरित पर एक पुस्तक लिखी जिसका नाम ''तुजुक-ए-जहाँगीरी'।

मुद्राएं तथा मोहरें:-

भारतीय मुद्राओं का अध्ययन भी प्राचीन भारत के इतिहास पर प्रकाश डालता है। न्यूमिस्मैटक सोसाइटी ऑफ इण्डिया इस दिशा में बहुत उपयोगी कार्य कर रही है। हमारे पास भारत के विभिन्न भागों से प्राप्त विविध प्रकार की मुद्राएँ एकत्रित है जो भारत के इतिहास को समझने में पर्याप्त सहायता देती है ये मुद्राएं सोना, चाँदी और ताँबा आदि धातुओं की है।

मुद्राएं देश के इतिहास के निर्माण में हमारी सहायता करती है। ये हमें शासन का परिचय देकर यह बतलाती है कि उसने कब-कब भारत के किस-किस भाग में राज्य किया है। केवल इन मुद्राओं से कई बार हमें विभिन्न राजाओं के अस्तित्व का भी पता चलता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि इन मुद्राओं के अभाव में राज अज्ञात ही रह जाते । इन मुद्राओं का सबसे बडा लाभ यह है कि इनसे प्राप्त जानकारी के आधार पर इतिहास के अन्य स्त्रोतों उदाहरणार्थ पुराणों द्वारा बताए गए ब्योंरों की प्रमाणिकता का पता चलता है। कालक्रम का निणर्य करने में भी यह हमारी सहायता करते है।

मुद्राएं बताती है कि किस वर्ष में उन्हें बनाया गया। मुद्राओं की प्राप्ती से यह जाना जा सकता है कि किस राजा ने कब तक राज्य किया। इनसे राजा के गद्दी पर बैठने और मृत्यु की तिथि का अनुमान लगाया जा सकता है। मुद्राओं ने हमें समुद्रगुप्त की ठीक तिथियाँ जानने में सहायता दी है।

भारत में पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होने वाली रोमन मुद्राओं से पता चलता है कि किसी समय में भारत और रोमन साम्रज्य के बीच पर्याप्त मात्रा में व्यापार होता था। इनसे भारतीयों की आर्थिक स्थिति तथा उनके समुद्र पार जाने का पता चलता है। इन मुद्राओं पर राजाओं के चित्र भी अंकित है। उनके आधार पर उन राजाओं की सिर की पौशाक के बारे में धारणाएँ बनाई जा सकती है। कभी-कभी तो इन मुद्राओं से राजाओं के मनोरंजन और उनके प्रिय व्यापारों का भी पता चलता है। इन मुद्राओं से देश की आर्थिक स्थिति आंकी जा सकती है। यदि लोग सोने और चाँदी की मुद्राओं का व्यवहार करते है तो निश्चय ही उनकी आर्थिक अवस्था अच्छी होगी, किन्तु यदि इसके विपरीत केवल ताँबे की मुद्राओं का व्यवहार करते है या सोने चाँदी की अपेक्षा ताँबें की मुद्राएँ उनके पास अधिक है तो इससे स्पष्ट है कि उनकी आर्थिक अवस्था बहुत अच्छी नहीं थी।

भारत पर हुणों के आक्रमण के समय गुप्त वंश की **मुद्राएं** उत्कर्ष पर न थी। गुप्त कालीन मुद्राओं पर अंकित चिन्हों से पता चलता है कि हिन्दू धर्म के प्रति उनमें कितना उत्साहथा।

प्राचीन भारत में यूनान के आक्रमण के पश्चात मुद्राओं पर राजाओं का नाम भी अंकित किया जाने लगा। इण्डो-बैक्ट्रियन राजाओं ने अत्यधिक संख्या में मुद्राएं जारी की। पंजाब और उत्तर - पश्चिम सीमांत की भूमि इन्हीं राजाओं के अधीन थी। इन मुद्राओं पर उत्कृष्ट कला दिखाई गई है और उनका भारतीय मुद्राओं पर अत्यधिक मात्रा में प्रभाव पड़ा है।

यदि ये मुद्राएं न प्राप्त होती तो इन राजाओं से हम सर्वथा अपरिचित रहते।

निष्कर्ष

किसी भी देश की संस्कृति की पहचान और उसका महत्व समकालीन कला पर पुरी तरह निर्भर रहा है। भारतीय राजाओं ने अपने दरबार की पहचान को बनाये रखने के लिये कला को अपनाया तथा उसे पनपने का मौका दिया। कला को किसी ना किसी रूप में स्वीकार किया जिसके उदाहरण पोथियों में दीवारों पर मोहरों तथा ताड़पत्र, कागज के चित्र ऐतिहासिक ग्रन्थ चट्टानों आदि पर भरपूर मात्रा में देखने को मिलते है। भारतीय शास्त्रों के अध्ययन से पता चलता है कि कला का हमारे जीवन में क्या महत्व रहा है

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *रामनाथ मिश्रः भारतीय मूर्तिकला, दिल्ली, 2002 पृ. 25*
2. *वासुदेव शरण अग्रवालः भारतीय कला वाराणसी, 1999, पृ. 12*
3. *वानस्पति गैरोलाः भारतीय चित्रकला, इलाहाबाद, 1967, पृ. 40*
4. *रागेय राघवः प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास, पृ. 6*
5. *भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, डॉ. रीता प्रताप*
6. *www.knowindia.gov.in*
7. *विन्सेट स्मिथः फाइन आर्ट इन इण्डिया एण्ड सीलोन, पृ. 86*